ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 94-95
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

दार्शनिक अराजकतावाद और महात्मा गाँधी

धीरेन्द मणि त्रिपाठी
असि0 प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान, श्री रैनाथ ब्रह्मदेव पी0जी0 कालेज, सलेमपुर, देवरिया (उ0प्र0), भारत

Received- 20.11.2019, Revised- 23.11.2019, Accepted - 26.12.2019 E-mail: - sambadindia@gmail.com

सारांश : ***राजनीतिज्ञों में संत और संतो में राजनीतिज्ञ महात्मा गाँधी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के मुख्य सूत्रधार और विश्व शांति के पुजारी थे। सत्य अहिंसा का चिन्तन भारत सहित समस्त विश्व का पथ प्रदर्शन कर रहा है, महात्मा गाँधी सदैव चरित्र की उत्कृष्टता और विश्व शांति पर बल देते थे। महात्मा गाँधी ने राज्य, समाज, सरकार, शासन और सत्य अहिंसा के सन्दर्भ में अपने विचारो को प्रस्तुत किया उनके मौलिक विचारो को गाँधी दर्शन के नाम से जाना जाता है।***

कुंजीभूत शब्द– आन्दोलन, सूत्रधार, विश्व शांति, अहिंसा, चिन्तन, प्रदर्शन, उत्कृष्टता, मौलिक विचारों।

महात्मा गाँधी राज्य मुक्त समाज को आर्दश मानतें हुये राज्य मुक्त समाज के बारे में कल्पना करते हैं। वह तात्विक दृष्टि से संसार के समस्त वस्तुओं को क्षणभंगुर मानते है और आध्यात्मिक सत्ता को स्वीकार करते है। ''आर्दश समाज'' की पृष्ठभूमि अहिंसक प्रजातंत्र रखते हैं। गाँधी जी राज्य की सार्वभौमिकता के सम्बन्ध में कई प्रकार की विचारधाराओं अद्वैतवादी सिद्वान्त (हीगल, आस्टिन, हाब्स), बहुलवादी (फालेट, लास्की, लिंडसे, दुर्खीम, फिंगिस) और अराजकतावादी विचारधारा के विपरित महात्मा गाँधी ने न तो राज्य को ईश्वर या कानून के आधार पर निरपेक्ष, निरंकुश, संप्रभुता प्रदान करते हैं और ना ही अराजकतावादियों के समान संपूर्ण सत्ता सहित राज्य को समाप्त करना चाहते है। गाँधी समन्वयवादी विचारधारा के समर्थक थे। महात्मा गाँधी के अनुसार राज्य की संप्रभुता का आधार मात्र जनता की इच्छा न होकर नैतिक शक्ति भी है।

गाँधी जी मानते हैं कि हिंसा और प्रजातंत्र एक साथ नही रह सकते है। वे दमन और शोषण के विरोधी थे। महात्मा गाँधी के अहिंसक राज्य में पूर्वाग्रह अज्ञान और अंधविश्वासों का कोई स्थान नही है, महात्मा गाँधी सभी प्रकार के शोषण का अंत और समाज के सभी वर्गो के उत्थान की बातें करते हैं, गाँधी जी विकेन्द्रीकरण का समर्थन करते है, विकेन्द्रीकरण को आर्थिक व राजनीतिक दोनो क्षेत्रों मे लागू करना चाहते हैं, स्वायतत्ता का समर्थन करते है, इालिये ग्राम स्वराज्य की परिकल्पना करते हैं। महात्मा गाँधी के अनुसार विकेन्द्रीकरण के तहत प्रत्येक गाँव, संस्था तथा व्यक्ति को पूर्णरूपेण विकास करने का अवसर मिलता है। गाँधी जी का अहिंसक राज्य स्वावलम्बी, स्वषासित तथा सत्याग्रही ग्रामों का संघ होगा जो स्वेच्छया पर आधारित होगा। ग्राम और ग्रामीण अपने समस्त अधिकारों का प्रयोग एक पंचायत के अन्तर्गत करेगें। गाँव नैतिक व अहिंसक दृष्टि से इतना शक्तिशाली होगें कि सत्याग्रह के माध्यम से अपनी पूर्ण सुरक्षा कर सकेगें। ग्राम पूर्णतः स्वतंत्र होगे। ग्रामों के माध्यम से राज्य को शक्ति मिलेगी और राज्य के माध्यम से ग्राम को शक्ति। ग्रामों में सबके अधिकार समान होगें। ग्राम में सभी संस्थाओं का आपस में सम्बन्ध होगा।

महात्मा गाँधी लोक षक्ति के उपासक थे इसिलिये उन्होनें ग्राम स्वराज्य की परिकल्पना की। गाँधी जी के अनुसार अन्याय और शोषण के खिलाफ जब जनता द्वारा लोक शक्ति जब राज्य को धारण करती है लोक सत्ता बन जाती है, गाँधी जी लोक शक्ति जनता से विकसित कर लोकसत्ता तक पहुँचातें है।

महात्मा गाँधी ने रामराज्य की परिकल्पना की जिसमें नैतिक शक्ति प्रबल है न कि राज्य शक्ति। महात्मा गाँधी जी ने जितनी भी व्यवस्थाओं, पुलिस, जेल, न्यायालय के जिस स्वरूप का रेखाकंन किया उसका स्पष्ट प्रभाव वर्तमान व्यवस्था पर परिलक्षित है। आज गाँधी जी के विकेन्द्रीकरण की कल्पना पर ही ग्राम पंचायत गतिमान है।

गाँधी जी ने सत्य (Truth) और अहिंसा (Non violance) के सिद्वान्तो के आधार पर मानवता को समाज के नव–निर्माण की नई राह दिखाई। गाँधी जी ने राजनीति और नैतिकता के बीच पुल का निर्माण करते हुये यह तर्क दिया कि राजनीति के क्षेत्र में साधन और साध्य दोना समान रूप से पवित्र होने चाहिए। गाँधी जी समस्त भौतिक आवश्यक्ताओं की पूर्ति के स्थान पर आवश्यक्ताओं को संयम करने पर बल देते है। गाँधी जी शारीरिक श्रम के पक्षधर थे। वे श्रम की महत्ता को प्रतिष्ठित करते हैं।

महात्मा गाँधी राज्य का निषेध हिंसा के आधार पर नही वरन नैतिक और आदर्श आधारो पर करते हैं। गाँधी जी

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

के अनुसार राज्य का आधार ही ताकत (सेना और पुलिस) हैं। जो कि अहिंसा के विपरित है। राज्य अनिवार्य रूप से ऐसे कानून बनाता है जो सभी व्यक्तियों को एक जैसे ढ़ाचे में बाधँतें है इससे व्यक्तियों की आत्मिक स्वतंत्रता बाधित होती है। महात्मा गाँधी न तो काल मार्क्स की तरह हिंसा का समर्थन करते है और न तो पीटर क्रोपोत्किन की तरह राज्य के साथ साथ धर्म की निषेध की बात करते है और राज्य की न्यूनतम कार्य की बात करते है। इसी से वे दार्शनिक अराजकतावादी के रूप में विख्यात हैं

वर्तमान समय मे महात्मा गाँधी के विचार अति प्रासंगिक और समीचीन है। इनके विचार एक संदेश है जिससे मानव जीवन व समाज में शांति का संचार होता है,साथ ही मानव मूल्यो में वृद्धि होती है। समस्त विश्व का कल्याण अगर सम्भव है मानव मानवता की प्रगति अगर सम्भव है तो महात्मा गाँधी के विचारो को आत्मसात करके ही सम्भव हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रभु आर.के., (सपा0)1946 गाँधी जी पंचायती राज, अहमदाबाद। नवजीवन प्रकाशन मन्दिर।
2. अशोक, (सपा0), गाँधी जी का विद्यार्थी जीवन, नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन।
3. दामोदरन, के0 भारतीय चिंतन मंडल, नई दिल्ली, पिपुल्स पब्लिसिंग हाउस प्रा0लि0।
4. गावा, ओ.पी. महात्मा गाँधी पेज 321, मयूर पेपर बैक प्रकाशन नोयेडा I.95 सेक्टर–5, 2009.
5. भारतीय राजनीतिक चिन्तन, डॉ0 बी0एल0 फडियां साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा।

*****